IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 4, Issue 3, April 2021

fp=dV d èkkfed LFky ,o mudh egÙkk

Mk- dhfr 'kDyk
असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर, जनपद चित्रकूट (उ.प्र.)

अपनी परिधि में दो प्रान्तों की सीमाओं को समेंटे हुये चित्रकूट का भूभाग धार्मिक स्थल के रूप में लोकविदित है। रामायण काल में दण्डकारण्यश नाम से सुप्रसिद्ध यह क्षेत्र धार्मिक क्रियाकलापों तथा ऋषि–मुनियों की तपोस्थली रहा है। चित्रकूट का नामकरण ''चित्र'' एवं ''कूट'' दो शब्दों के मिलने से हुआ है। चित्र का शाब्दिक अर्थ षविभिन्न रंगयुक्तष तथा कूट का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत शिखर' होता है। इस प्रकार चित्रकूट का शाब्दिक अर्थ हुआ ''विभिन्न रंगयुक्त शैलों वाला पर्वत शिखर''।[2]

जनश्रुति के अनुसार भगवान श्रीराम के चरणचिन्हों से अलंकृत चित्रकूटधाम देश का महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र है। उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में संयुक्त रूप से फैली हुयी विन्ध्य पर्वत श्रंखला से घिरा हुआ यह भू–भाग इलाहाबाद के दक्षिण–पश्चिम में लगभग 130 किमी0 की दूरी पर पयस्वनी नदी के सुरम्य तट पर अवस्थित है। अपनी प्राकृतिक सुषमा तथा धार्मिकता के कारण सदैव से ही यह स्थल ऋषि–मुनियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है तथा ऐतिहासिक काल में पृथक–पृथक काल खण्डों में चेदि, जुझौती, चिचिटों तथा बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत समाहित था।[3]

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की बात करें तो भारत के अन्य प्रागैतिहासिक स्थलों की भाति चित्रकूट तथा समीपवर्ती क्षेत्रों से प्राचीन मानव के प्रमाण पाषाणोपकरणों के माध्यम से प्राप्त हुये हैं। डॉ० पी.सी. पन्त[4] एवं प्रो. जे.एन. पाण्डेय जी[5] ने जनपद के विभिन्न स्थलों से पुरापाषणिक उपकरण प्राप्त किये हैं। देश के विभिन्न भागों की तरह जनपद चित्रकूट से भी शैलचित्र प्राप्त हये हैं। प्रथमतः काकवर्न[6] महोदय ने 1883 ई. में चित्रकूट जनपद के हनुमानधारा, मारकुण्डी एवं मझगवां से शैलचित्रों की खोज की। इसके पश्चात सन् 1907 ई0 में बांदा में कार्यरत तत्कालीन आई.सी.एस. अधिकारी सी.ए. सिल्वेराड[7] महोदय ने सरहट, मलवा, कुरियाकुण्ड, खरपटिया, अमवां, उल्डन और बरगढ़ से गेरूवे रंग के चित्रित शिलाश्रयों को खोजा। कालान्तर में इन्हीं अनगढ़ पाशाणोपकरणों से झांकती हुयो कला क्षेत्र विशेष में सम्पन्न प्रतिमाओं एवं मन्दिरों के निर्माण के रूप में विकसित होती गई।